सुमित्रानंदन पंत भारत माता

भारत माता कविता में कविवर पंत की यथार्थवादी रचना है जिसमें कवि ने स्वाधीन भारत के यथार्थ जीवन का मार्मिक रूप में चित्रण किया है। पराधीनताजन्य दुर्बलताओं और कुंठाओं का स्मरण करते हुए कवि ने भारत को फिर से उस दार्शनिक गौरव गरिमा को प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान की है। जिसके कारण वह विश्व में सम्मान प्राप्त करता रहा ह

1. "भारत माता ग्रामवासिनी .....घर में प्रवासिनी।।"

शब्दार्थ - श्यामल - कृष्ण वर्ण, सैन्य- दीनता, निर्धनता, विष्णु - दुख।

प्रस्तुत अवतरण में कवि ने भारत माता का वर्णन करने के साथ साथ भारतीय जन जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। यह भारत माता ग्रामवासिनी है। दूर तक फैले हुए खेतों का शस्य-श्यामल रूप है। उसका आंचल धूल से भरा होने के कारण मैला सा दिख पड़ता है। दूसरे शब्दों में भारत मां के आंचल की छाया में भारतीय जन समाज अपना दिन हीन जीवन व्यतीत करता है। गंगा और यमुना में प्रवाहित जल भारत मां के नेत्रों से प्रवाहित होने वाले अश्रु बिंदु ही है जो अपने लालों के दुखों के परिणाम स्वरूप प्रभावित हुए हैं। वह भारत मां अपनी संतान के अभाव को देखकर उदासी से युक्त एवं मिट्टी की प्रतिमा की तरह दिखती है।

कवि कहता है कि वह भारत माता आज दैत्य की साकार प्रतिमा जान पड़ती है। अपनी दृष्टि वह नीचे की ओर किए हुए हैं। उसके अधरों पर अनवरत रूप से रूआँसी ही दिख पड़ती है। युग-युग के अंधकार, प्राचीन मान्यताएं और परंपरा जो गल सड़ भी गई है उसके कारण उसका मन अत्यंत विषाद से पूर्ण है। उसका यह रूप देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह अपने घर में एक प्रवासी के समान जीवन यापन कर रही है।

भारत की स्वाधीनता के पश्चात दीन हीनता का मार्मिक चित्रण है। भारत के प्रति कवि की भावना का चित्रण है।

2. "तीस कोटी संतान .....शरदेन्दु हासिनी।।"

शब्दार्थ - क्षुधा - भूखे, स्मिता- मुस्कान, शरदेंदु - शरद का चंद्रमा।

प्रस्तुत अवतरण में कवि ने भारतीय जनजीवन के अभावों और समस्याओं की ओर संकेत करते हुए उसके गौरवशाली रूप का पराधीनता के कारण होने वाले परिहास का मार्मिक चित्रण किया है।

भारत मां की तीस करोड़ संतान है। जिनका वस्त्रों के अभाव के कारण शरीर नग्न है। खाने के लिए अन्य नहीं है। जिसके कारण वह अर्द्धक्षुधित ही रह जाती है। उसका निरंतर शोषण हो रहा है। रक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्र भी उसको प्राप्त नहीं है। अपनी रक्षा करने का कोई भी साधन उसके पास नहीं है। अन्न वस्त्र आदि न मिलने के कारण संपूर्ण समाज पीड़ित ह मूढ़ता, असभ्यता, अशिक्षा और निर्धनता के कारण भारत की स्थिति इस प्रकार है मानो अत्याचार और शोषण के कारण उसका सिर झुका हुआ है। अपनी संतान के दुखों से संतप्त भारत माता ऐसी जान पड़ती है जैसे घर बार न होने के कारण किसी वृक्ष के नीचे विश्राम करते हुए जीवन व्यतीत कर रही हो।

यहां की जनता यद्यपि धन-धान्य से परिपूर्ण है किंतु अशिक्षा और अंधविश्वासों आदि के कारण वह निरंतर अवनति को ही प्राप्त हो रही है। वह विश्व में होने वाली बहुमुखी प्रगति से सर्वथा अपरिचित है। यहां के निवासियों का मन धरती के सदृश कष्टों को सहन करने वाला है। फिर भी इसका मन कुंठित है। कहने का अभिप्राय है कि अर्द्धसभ्य होने पर भी भारतीय जनजीवन सुसंस्कृत प्रवृत्तियों से पूर्ण है, किंतु धार्मिक, पारिवारिक और सामाजिक अंधविश्वासों, रूढ़ियों ने उसका विकास और प्रगति के प्रवाह को कुंठित कर दिया है। भारतीय जनजीवन के अधरों पर निवास करने वाली वह मधुर मुस्कान आज कंपित-सी जान पड़ती है। शीतकालीन चंद्रमा के समान उन्मुक्त और सात्विक हंसी वाली भारत माता का जीवन उसी प्रकार का है जैसे चंद्रमा को राहुल ने ग्रस लिया हो। ग्रहण लगने पर चंद्रमा का आलोक कुछ निष्प्रभ हो जाता है, उसी प्रकार पराधीनता ने भारतीय जीवन के उदात्त मूल्यों को आच्छादित किया हुआ है। उसके जीवन में सहज आनंद का आभाव है।

प्रस्तुत अवतरण में कवि ने भारतीय जीवन के अभावों का यथार्थ रूप में वर्णन किया है। यहां अनुप्रास, उपमा तथा रूपक अलंकार की सुंदर योजना हुई है।

3. "चिंतित भृकुटि..... जीवन विकासिनी।"

शब्दार्थ - भृकुटि- भौंहे, तिमिरांकित - अंधकार से युद्ध, आनंद -श्री- मुख की शोभा। हरती दूर करना, भव-तम-भ्रम - संसार के अंधकार जन्म भ्रम।

प्रस्तुत अवतरण में कवि ने भारत की आधुनिक दशा का चित्र अंकित किया है और अभिव्यक्त किया है कि अहिंसा के अमर संदेश से ही संपूर्ण विश्व को अभय प्राप्त हो सकता है।

भारत माता की भौंहे टेढ़ी एवं गहन अंधकार से युक्त है। उनकी आंखें नीचे झुकी हुई हैं और आंसुओं से आपूरीत हैं। मुख की कांति मंद पड़ गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो चंद्रमा पर छाया पड़ गई हो। जब भारतीय जीवन इस प्रकार अस्त-व्यस्त हो तब जीवन का नव-निर्माण कैसे हो सकता है। जिसने कभी विश्व को गीता का अमर ज्ञान देकर प्रकाशित किया था। आज वही भारत अपने ज्ञान को विस्मृत करके अज्ञानी और मूढ़ बना हुआ है।

कवि अपने कथन का समापन करते हुए कहता है कि अब उसका (भारत माता) सभी तप और संयम सार्थक हो रहा है। सफलता प्राप्त कर रहा है। और उसमें हमें अमृत के सदृश अपने स्तन से अहिंसा का दुग्ध-पान कराया है। जिसके परिणाम स्वरूप हमारे मन में परिव्याप्त भय, सांसारिक अंधकार, अज्ञान एवं भ्रम विनष्ट हो गया है और वह जगत्-जननी भारत माता आज जीवन का बहुमुखी विकास करने में संलग्न ह

प्रस्तुत पद में कवि ने भारतीय जन जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। यहां अनुप्रास अलंकार का सुंदर योजना भी हुआ है।